

श्री लक्ष्मी नृसिंह करावलम्ब स्तोत्रम्
श्रीमत पयोनिधि निकेतन चक्र पाणे
भोगीन्द्र भोग मणि रन्जित पुण्य मूर्ते
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ १ ॥

ब्रह्मेन्द्र रुद्रमरुदक किरीट कोटि
सन्घट्टितान्घ्रि कमलामल कान्तिकन्त
लक्ष्मी लसत कुच सरोरुह राज हम्स
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

सम्सार घोर गहने चरतो मुरारे
मारोग्र भीकर मृग प्रवरादितस्य
आर्तस्य मत्सर निधाघनि पीडितस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

सम्सार कूपम अति घोरम अगाध मूलम
सम्प्राप्य दुख शत सर्प समाकुलस्य
दीनस्य देव क्रुपणा पदमागदस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

सम्सार सागर विशाल कराल काल
नक्कग्रह ग्रहन निग्रह विग्रहस्य
व्यग्रस्य राग रसनोर्मिनि पीडितस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

सम्सार वृक्षमघ बीजम अनन्त कर्म
शाखा शतम करण पात्रमनङ्ग पुष्पम
आरोग्य दुख फलितम पठतो दयाळो
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ ६ ॥

सम्सार सर्प घन वक्त्र भयोग्र तीव्र
दम्श्ट्र कराल वृष दग्ध विनश्ट मूर्ते
नागारि वाहन सुधाब्धि निवास शौरे
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ ७ ॥

सम्सार दाव दहनातुर भीकरोरु
ज्वाला वली भिरति दग्ध तनूरुहस्य
त्वत पाद पद्म सरसि रुहमागतस्य
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ ८ ॥

सम्सार जाल पठितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्त बढिशाग्र झशोपमग्य
प्रोत कण्डित प्रचूर तालुक मस्तकस्य
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ ९ ॥

सम्सार भीकर करीन्द्र कराभिघात
निशिपशत वर्म वपुश सकलार्ति नाश
प्राण प्रयाण भव भीति समाकुलस्य
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ १० ॥

अन्धस्य मे हृत विवेक महा धनस्य

चौरै प्रभो बलिभिर इन्द्रिय नाम धेयैहि
मोहान्ध कूप कुहरे विनिपाति तस्य
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ ११ ॥

अद्ध्वा गले यमभता बहुतर्जयन्तह
कर्शन्ति यत्र भवपाश शतैर्युतम माम
एकाकिनाम परवशम चकितम दयाळो
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ १२ ॥

लक्ष्मी पते कमला नाभ सुरेश विश्णो
वैकुण्ठ क्रिष्ण मधु सूदन विश्वरूप
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन चक्रपाणे
देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम ॥ १३ ॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शन्खम
अन्येन सिन्धुतनयाम अवलम्ब्य तिष्ठन
वामे करेण वरदाभय पद्म चिह्नम
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ १४ ॥

सम्सार सागर निमज्जन मुह्यमानम
दीनम विलोकय विभो करुणानिधे माम
प्रह्लाद खेद परिहार परावतार
लक्ष्मी नृसिम्ह मम देहि करावलम्बम ॥ १५ ॥

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक
व्यासादि भागवत पुण्गवह रिन्निवास

भक्तानुरक्त परिपालन पारिजात
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम ॥ १६ ॥
लक्ष्मीनृसिंह चरणाब्ज मधुव्रतेन
स्तोत्रम क्रुतम शुभाकरम भुवि शङ्करेण
ये तत्पठन्ति मनुजा हरिभक्ति युक्ताह
ते यान्ति तत्पद सरोजम अखण्डरूपम ॥ १७ ॥
इति श्री लक्ष्मी नृसिंह करावलम्ब स्तोत्रम सम्पूर्णम

www.yousigma.com